तारा दत्त जोशी

'बूँदें'

'बूँदें'

नभ से झर झर झरती बूँदें,
बसुधा में जीवन भरती बूँदें।
रवि के ताप दोष को हरती बूँद,
कितनी सारी कितनी प्यारी बूँदे।

सुरबाला के कोमल कच सी,
जलद से आती पीयूष रस सी।
घर से निर्भय होकर चलती,
इठलाती, बलखाती बूँद।

कभी मन्द फुहारें बनकर,
और कभी बौछारें बनकर।
कभी तीक्ष्ण जलधारें बनकर,
नाना रूप दिखाती बूँदे।

हिमगिरि के उजले शिखरों पर,
दिनकर की किरणों से मिलकर।
स्वर्णिम तारावलि सी खिलकर,
झिलमिल झिलमिल करती बूँदे।

शैलेन्द्र शिखर को शीश नवाकर,
बन जाती हैं मानसरोवर।
शिव जट की अटवी पर गिरकर,
सुरसरिता बन जाती बूँदे।

सुरसरिता में विमल वारि वन,
नित नहलाती वसुधा का तन।
पाप नसाती, पुण्य कमाती,
जीवन कलुष बहाती बूँदे

अचला के आँचल में आकर,
चराचर की प्यास बुझाकर।
नाना तृन, प्रसून उगाकर,
हरियाली फैलाती बूँदें।

फसलों की कोमल गाबों में,
नूतन किसलय बाल खिलाकर।
पौधों को फलदार बनाकर,
जीवन भूख मिटाती बूँदें।

बूँद नहीं ये प्यारी मणियाँ,
जीव लोक की जीवन कड़ियाँ।
रोको, ना हो इनकी बरबादी,
ये जीवन धारा आवाद बनाती।

आओ! मिलकर इन्हें समेटें,
इनको भू के अन्तः तल में भेजें।
भू-गत जल तल ऊपर उठायें,
जब चाहें, तब जी भर पायें।

ता-ता-थैया

ता-ता थैया, ता-ता थैया,
वर्षा आयी रामू भैया।

नील गगन में होता शोर,
घटा घिरी है चारों ओर।

रामू आओ, डेविड आओ,
असमत भैया को बुलाओ।

वर्षा के संग हम खेलें,
लम्बा सा एक पाइप ले लें।

पाइप को परनाले से जोड़ो,
दूसरा छोर हौज में छोड़ो।

वर्षा जल से हौज भरेंगे,
भू-गत जल की बचत करेंगे।

मोती छोटी गूल बनाओ,
पेड़ में बहता जल पहुंचाओ।

बहता पानी, खोह में जाये,
भू-जल का तल ऊपर आयें।

बन्द होगी जब वर्षा रानी,
काम आयेगा हौज का पानी,

वर्षा जल को काम में लाओ,
जल की हर एक बूँद बचाओ।

ता-ता थैया, ता-ता थैया,
बन्द हो गयी वर्षा भैया।

संपर्क करें:
तारा दत्त जोशी (स.अ.)
रा. इ. का. पैटना
पोस्ट-तुषराड़, जिला नैनीताल
पिन-263132
मो.नं. 9411596313,
7055454229